मधुबन ओमू शान्ति अंक 328 नवम्बर 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(12-10-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा साथी को साथ रख, साक्षी हो पार्ट बजाने वाली पदमापदम भाग्यशाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो आप सभी दीपावली का पावन पर्व खूब उमंग-उत्साह के साथ मनाने की तैयारियां कर रहे होंगे! यह भी संगम के यादगार पर्व हैं। दीपावली पर्व यज्ञ स्थापना के साथ दादियों के अलौकिक जन्म दिन का यादगार है, इसलिए मधुबन में भी इसे खूब धूमधाम से मनाते हैं। इस पावन पर्व की आप सबको बहुत-बहुत शुभ बधाईयां। सदा खुशियों में नाचते, उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते आगे बढ़ते चलो।

मुझे तो सदा यही याद रहता है कि बाबा मेरा साथी है और ड्रामा की हर सीन साक्षी होकर देखने से स्थिति बहुत अच्छी एकरस रहती है। मैं अपने आपको बहुत-बहुत भाग्यवान समझती हूँ जो भगवान ने मेरे को कदम कदम में पदमों की कमाई करना सिखाया है। मुझे संकल्प चलाना नहीं आता है। क्या संकल्प चलाऊं, मैंने साकार बाबा को देखा है। लास्ट के 3 साल ऐसे रहा... तो बाबा को देख कर यही सीखा है। बाबा एक दिन छत पर बहुत शान्ति में बैठा था, हम देख रही थी, ऐसे लग रहा था जैसे बाबा से शान्ति की किरणें निकल रही हैं। वह साइलेन्स बहुत अच्छी लग रही थी। हमारी साइलेन्स में खुशी भरी हुई है, हम इसे डेड साइलेन्स भी नहीं कह सकते। अन्तर्मुख होके स्व-उन्नति एवं सेवा के अच्छे-अच्छे नये नये सोच विचार करते हैं तो उससे भी खुशी होती है, सुख मिलता है।

अब तो यही जी चाहता है कि जो करना है अब कर लें, कल किसने देखा। मैं बाबा की, बाबा मेरा इसमें खुशी बहुत है। हरेक का पार्ट अपना-अपना है। मुझे न किसी बात की चिंता है, न चिंतन है। चिंता होती है कौन करेगा! कैसे होगा? चिंतन में पता नहीं कहाँ से कहाँ चले जाते हैं, इससे टाइम, मनी, एनर्जी सब वेस्ट हो जाती है। हमारा सब कुछ सफल हो, इसके लिए कोई भी बात में कुछ भी होता है तो सिर्फ अटेन्शन रखो, कोई भी बात अधिक सोचकर बड़ी नहीं बनाओ। कोई भी ऐसी भूल न हो जिससे हमारी लाइफ की क्वालिटी शर्मसार हो। सच्चा ब्राह्मण एक उदाहरण रूप बनता है, हम सबके लिए मिसाल बनें, सबका कल्याणकारी बनें। थोड़ा टाइम एकान्त में बैठकर सोचो, एक्यूरेट ब्राह्मण की लाइफ क्या है? अपने जीवन को देखो। उदाहरण रूप ब्राह्मण बनना है तो बाबा जो कहता है वह करते चलो, जो खिलाता है, जैसे खिलाता है, जैसे सुलाता है... वैसे करते रहना है। बाबा के कहने अनुसार उदाहरण रूप बन सबका उद्धार करने की भावना हो। पहले बाबा का आधार लेना है फिर औरों को आधार देना है, ताकि वो आत्मा भी उदाहरण रूप बन जाये, यही है शुभ चिंतन में रहना। ऐसी शुभ चिंतन में रहने वाली आत्मा शुभ चिंतक बन जाती है। स्व कल्याण में विश्व कल्याण समाया हुआ है।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें याद और सेवा का बैलेन्स रख, सर्व की ब्लैसिंग लेते हुए ब्लिसफुल जीवन का अनुभव कर रहे हो ना!

अभी तो मधुबन वरदान भूमि में अव्यक्त अनुभूतियां करने, स्वयं को सर्व शक्तियों, सर्व खजानों से भरपूर करने निमित्त देश विदेश के भाई बहिनें अपने-अपने टर्न अनुसार मधुबन पहुंच रहे हैं। बाबा की यह चरित्र भूमि, कर्म भूमि, तपस्या भूमि भी हर ब्राह्मण आत्मा को बहुत सुखद अनुभूतियां कराती है। संगठन की शक्ति भी स्वयं में बल भर देती है। बाबा अपने हर बच्चे को सूक्ष्म रूप से अपनी उपस्थिति का अनुभव करा देते हैं। अच्छा - आप सब अपनी ऊंची स्थिति बनाते, सदा खुश मौज़ में होंगे। सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“परमात्म प्यार में सदा लवलीन रहो”

1) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती ।

2) ये परमात्म प्यार इस एक जन्म में ही प्राप्त होता है। 83 जन्म देव आत्मायें वा साधारण आत्माओं द्वारा प्यार मिला, अभी ही परमात्म प्यार मिलता है। वह आत्म प्यार राज्य-भाग्य गँवाता है और परमात्म प्यार राज्य-भाग्य दिलाता है। तो इस प्यार के अनुभूतियों में समाये रहो।

3) बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है–समान, कर्मातीत बनो। ‘करावनहार’ होकर कर्म करो, कराओ। कर्मेन्द्रियां आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म नहीं करो।

4) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कभी कोई परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

5) परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है। लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है–न्यारा बनना। जो जितना न्यारा है उतना वह परमात्म प्यार का अधिकारी है।

6) परमात्म प्यार में समाई हुई आत्मायें कभी भी हद के प्रभाव में नहीं आ सकती, सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहती हैं। उनसे सदा रूहानियत की खुशबू आती है।

7) प्यार की निशानी है–जिससे प्यार होता है उस पर सब न्यौछावर कर देते हैं। बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं। और साथी बन सदा साथ निभाते हैं। तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो।

8) बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो–मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ।

9) जो प्यारा होता है उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा–तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते। और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता। इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

10) परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो तो इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते रहेंगे। परमात्म-प्यार उड़ाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

11) यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींच कर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाते हैं उनके अनेक दु:ख भूल जाते हैं और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगते हैं।

12) जीवन में जो चाहिए अगर वह कोई दे देता है तो यही प्यार की निशानी होती है। तो बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं। साथ-साथ श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी देते हैं, जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो – यही परमात्म प्यार है।

13) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवन मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है ‘सहज योगी जीवन’।

14) जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है। तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता। इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये... अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ।

15) बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें।

16) आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 27-02-15 *मधुबन*

"राजयोगी वह है जिसकी स्थिति रॉयल, रीयल और नेचुरल है, कोई मेहनत नहीं है"

(दादी जानकी जी)

बाबा ने पहले हम सबको याद में रहने की प्रैक्टिस कराई। याद ऐसी हो जो और कुछ याद न आये। कार्य व्यवहार भले करो पर कोई बात याद न आवे। आज की मुरली में बाबा ने याद के ऊपर इतना अच्छा ध्यान खिंचवाया। कर्मयोगी भले रहो, कर्म भले करो क्योंकि यज्ञ है पर राजयोगी के संस्कार रॉयल होते हैं। राजयोगी बड़ा रॉयल, रीयल, नेचुरल ऐसी अपनी स्थिति हो। परिस्थितियां आयेंगी क्या बड़ी बात है, खेल है। अब सतयुगी महाराजा महारानी बन रहे हैं इसलिए रॉयल्टी है। तो ऐसी स्थिति नेचुरल बनानी है। अच्छा है ना। कोई मेहनत नहीं है। मैं तो वन्डर खाती हूँ कौन कौन कहाँ कहाँ से आये हैं, परन्तु हम बाबा के हैं। भूल गया था कहाँ के हैं।

एक बात पक्की कर दी है बाबा मेरा साथी है और मैं हूँ साक्षी। अभी शरीर ऐसा है जो ईश्वर को मंजूर है, मैं खुश हूँ। मेरे को क्या होता है मुझे पता ही नहीं, रीयली जैसे बाबा ने सब समर्पण किया, उसके बाद कोई नोट को हाथ नहीं लगाया, कभी नहीं हाथ लगाया। बाबा ने कहा यज्ञ चलता रहेगा, बस यज्ञ चलने लगा। कई आते गये, समर्पण होते रहे यज्ञ चलता रहा, आज यज्ञ कैसे चल रहा है सिर्फ साक्षी हो करके हम देख रहे हैं। जो जैसे हमारा बाबा है ऐसे हमको भी बाबा को फॉलो करना है। प्रेम से जो सही है वो करो तो क्या बन जायेंगे? हीरा बन जायेंगे। हीरा बनना है, हीरो पार्ट बजाना है। अच्छा।

(डबल विदेशी भाई बहिनों के साथ रूहरिहान)

मेरे मीठे मीठे मीठे मीठे बाबा के बच्चे हैं, यह जन्म आप लोगों ने विदेश में लिया। यह सब किसने खेल रचाया! अपने आप सभी कुछ करके अपने आप छिपाया। हरेक जानता है ना! तो सब राज़ी खुशी हैं? कभी नाराज़ तो नहीं होते हैं? खुशराज़ी। ऐसी सभा कभी नहीं देखी। यह किसकी इन्वेंशन है? यह छुपके छुपके पता नहीं क्या करते हो! चलते चलते कोई मिल गया... यह गीत भी वन्डरफुल है। अभी कोई कोई इतने अच्छे बच्चे बाबा के हैं जो खुद को भी जानते हैं, बाबा को भी जानते हैं, मेरे को भी जानते हैं, ऐसे हैं ना! बाबा ने सिन्धी बोलना बन्द करा दिया क्योंकि बाबा ने कहा सिन्धी में बोलेंगे तो फालतू बात करेंगे। तो बाबा ने कहा न पराई बातें करो, न पुरानी बातें करो, अगर किसी ने किया तो उसका खाना बन्द। तो मैं आप सबको भी हाथ जोड़के कहती हूँ कि कभी भी व्यर्थ बोलने, सुनने के आदती नहीं बनो।

सेवाओं में बाबा अपनी शक्ति और प्यार देता है। एक है बल, दूसरी है शक्ति, एनर्जी। बाबा मेरा बाप, शिक्षक, सतगुरु है परन्तु दीदी ने कहा बाबा को तुम सखा समझो। और एक गुप्त बात बताऊं, वह मेरा साजन भी है। तो बाबा माना क्या? मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हारा अन्त, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत। कोई न जाने पर मैं जानूँ तुम्हारा अन्त। पूछो तो बताऊं, ऐसा भगवंत (भगवान) है। मुख्य बात है मैं कौन हूँ? किसकी हूँ? क्या कर रही हूँ? मुझे कुछ नहीं आता है। पर जब तक मैं किसी को टोली न खिलाऊं, बाबा की कहानियाँ जो बहुत अच्छी है वो न सुनाऊं तो क्या... मेरा बाबा जितना खुद होशियार है, ऐसे हमें भी बनाता है।

मुझे खुशी है कि आप सब पवित्रता में, सत्यता में ऐसे होशियार हो, हरेक देखे धीरज न होता तो....इसलिए तीन बातों से बाबा ने मुक्त कर दिया वरी हरी करी..। जो बीता सो ड्रामा।

बाबा ने कहा था बच्ची कभी भी कुछ प्रॉब्लम हो तो इस बच्चे का (मुरली दादा का) ख्याल रखना, हमारी रजनी बहन वन्डरफुल। बाबा ने कैसे चुन-चुनके माला बनाई है। पहले गोद बिठाके फिर गले लगाया। यह सब वैजयंती माला में आने वाले हैं ना। यह सब बाबा के गले की माला बनने वाले हैं। अभी एक सावधानी देती हूँ, भूल से भी कभी आवाज़ से बात नहीं करना। कोई क्रोध से बात करे तो आप स्नेह देना। आप सभी इतने प्यारे, इतने मीठे शिव भोलानाथ बाबा के बच्चे हो। अर्जुन को जब विराट रूप का साक्षात्कार हुआ, वैराइटी सीन देख करके अर्जुन अति खुश हुआ। आप सब पुराने पुराने सेवा के फाउण्डेशन हो, झाड़ के नीचे भी अभी आप सबको बिठाना चाहिए।

दूसरा क्लास 2-3-15

"साइलेन्स के अन्दर डीप में चले जाओ तो देह से न्यारे और बाबा के प्यारे बन जायेंगे"

आप सब इतनी साइलेंस में बैठे हो, साइलेंस और शान्ति में क्या फर्क है? साइंस अपना काम कर रही है, बड़ी अच्छी लग रही है। यह लाल लाइट जलती है तो ऐसे लगता जैसे डेड साइलेंस। एक साइलेंस है, दूसरी स्वीट साइलेंस है। मेरा मीठा बाबा साइलेंस में कहता है बच्चे। फिर हम कहते हैं बाबा! साइलेंस में जाने से अन्दर डीप चले जाते हैं, न्यारे हो जाते हैं और बाबा के प्यारे बन जाते हैं। न्यारा बनने से बाबा का प्यार और शक्ति फील करते हैं। जितने न्यारे, उतने बाबा के प्यारे। जब देही-अभिमानी स्थिति में बैठते हैं तो बहुत प्यारे लगते हैं। तो सभी दिल पर हाथ रखकर देखो ऐसी स्थिति है? कई बार मैंने देखा है कॉमेन्ट्री करते हैं, सुना भी है, पर आज की जो साइलेंस है, हिन्दी में कहते हैं शान्ति में बैठे हैं इंगलिश में कहते हैं साइलेंस में बैठे हैं। कहाँ बैठे हो? परमधाम में बैठे हो या निर्वाणधाम में या अव्यक्त वतन में बैठे हो? मैं समझती हूँ फर्स्ट टाइम है ऐसे, क्या समझते हो? अभी तो मैं इन्द्रप्रस्थ में ही बैठी रहती हूँ। आप सब लोग तो सेवा भी कर रहे हो परन्तु शक्ति भी खींच रहे हो। सेवा क्या है? अमेरिका में इसका प्रभाव पहुँचता है? यह कला बहन, मोहिनी बहन की याद लेके आई है। हरेक का पार्ट अपना है।

बाबा आप हमको परमधाम, निर्वाणधाम में लेके जा रहे हो। दिल कहता है निर्वाणधाम में बैठे हैं। जब मैं बाबा को देखती हूँ तो लगता है कि बाबा कितना वन्डरफुल है! साकार भी है, अव्यक्त भी है, निराकार भी है ऐसी भासना आती है? दिल को हाथ लगाओ। बाबा ने ड्रामा की नॉलेज बहुत अच्छी दी है। अच्छा लगा है चक्र और झाड़ दोनों है ना। जब मैं पहले पहले बाबा के पास आई तो बाबा चक्र बना रहा था। पीछे झाड़, हमारा विश्वरतन दादा वन्डरफुल था, कभी आवाज़ में नहीं आता था। मुझे किसी ने पूछा तुम आवाज़ में नहीं आती हो, शान्त क्यों रहती हो? सेवा के कारण आवाज़ में आना होता है, अभी साइलेंस में बैठते अनुभव होता है जैसे बाबा ने लिफ्ट में बिठाकर ऊपर चढ़ा दिया। बाबा ने जैसे एक गिफ्ट दी है लिफ्ट की। बड़ा सहज ज्ञान है। मैं समझती हूँ सहज योग है या सहज ज्ञान है? मेरा बाबा कहा तो योग सहज हो गया ना!

तीसरा क्लास 3-3-15

"महावीर वह है जिसे साधारण संकल्प भी न आये, 100 परसेन्ट निश्चय और प्युरिटी हो"

यह जो साइलेंस है, वह बाबा की शक्ति को खींचने वाली है। आपको भी यह फीलिंग आई होगी! बाबा कहते एक हैं महावीर, दूसरे हैं महारथी। महावीर हनुमान, कैसे पूँछ से सेवा कर रहा है, वन्डर है! जिसके अन्दर जिगरी मेरा राम (बाबा) है, तो वायब्रेशन्स से सारे विश्व की सेवा हो रही है। एक है वातावरण, दूसरा है वायुमण्डल, तीसरा है वायब्रेशन, तीनों ही सेवायें साथ-साथ हो रही हैं।

तो अपने से पूछो महारथी हो या महावीर हो? जो समझते हो, मैं महावीर हूँ, वह हाथ उठाओ। सम्भालके...। महावीर माना जिसे साधारण संकल्प भी न आये, इतनी प्यूरिटी हो, 100 प्रतिशत निश्चय हो तो बाबा शक्ति देता है। जब प्युरिटी है तो सच्चाई है, सच्चाई अन्दर में अचल अडोल बनाती है।

महावीर की क्वालिटीज़ क्या होती है, वो बहुत अच्छा अनुभव साकार बाबा ने कराया है। बाबा के साथ भोजन खाना सहज नहीं था। बाबा कौन, किसके साथ खा रहे हैं, इस पहचानने में बाबा देखता था, जो भी मुरली है शिवबाबा और ब्रह्माबाबा की पहचान देती है। ब्रह्माबाबा कहता है उसको याद करो, शिवबाबा कहता है इसको (ब्रह्माबाबा को) फॉलो करो। तो यह है महावीरपने की क्वालिटी। उसमें दृष्टि, वृत्ति, स्मृति नेचुरल है। दृष्टि का आधार है अन्दर की वृत्ति, स्मृति में आया तो संकल्प और वृत्ति में आ जाता है। मैं समझती हूँ सभी निश्चय बुद्धि विजयंती हैं ना। एक बारी बाबा ने कहा था माला

कोई एक की नहीं बनती है, माला 108 की एक नहीं होती है। तो आप सब माला में आने वाले हैं ना।

बाबा के होते यह हिस्ट्री हॉल बना, बाबा के अव्यक्त होने के बाद मेडिटेशन हॉल बनाया। हिस्ट्री हॉल में जाओ या शान्ति स्तम्भ पर बैठो, साकार के चरित्र याद आने लगते हैं। एक बारी साकार बाबा ने कहा बच्ची क्लास में चलो मैं तुमको बताता हूँ चार्ट किसको कहा जाता है! क्लास में चला और कहा तुम कभी दु:खी तो नहीं होती हो? तो मैंने कहा दु:ख देती भी नहीं हूँ, दु:ख लेती भी नहीं हूँ। अभी आप सभी से पूछती हूँ मैंने कभी किसी को दु:ख दिया है? बताओ। जिसको दु:ख मिला हुआ हो वो हाथ उठाओ। न दु:ख दिया है, न दु:ख लिया है। तो आप सब मेरे साथी हो, फिर महावीर में क्यों नहीं हाथ उठाया? महावीर स्वदर्शन चक्र फिरायेगा, तीसरे नेत्र से देखेगा। महावीर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक है।

आप लोगों को कानों में यह बात सुनाती हूँ – बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश, नेचुरल है जो बात बीती वह याद भी न आये। किसी ने पूछा चित और चिंतन में क्या फर्क है? तो चिंतन जैसा होगा वो चित वृत्ति हो जायेगी। एक है मनन, दूसरा है चिंतन, तीसरा है मंथन, चौथा है सिमरण। सिमर सिमर सुख पावो तो सब कलह क्लेष मिट जायेंगे। बाबा की बातें याद करने से और कोई बातें याद आती नहीं हैं।

बाबा ने विदेश में भेजा तो यह बाबा की कमाल है। बाम्बे में सब जगह ट्राम में एक आना देकर सेवायें करने चली जाती थी। ''सत्य क्या है'' यही सब जगह समझाती करती थी तो कईयों को लग जाता था। बाबा ने जो निश्चय कूट कूट कर अन्दर भर दिया है, वही निश्चय के बोल सबको अच्छे लगते हैं।

साकार बाबा ने अव्यक्त हो करके आप सबकी कैसे पालना की है, वन्डर है। साकार बाबा ने जो पालना दी है, वो रग रग में भरी पड़ी है। आदि से ले करके बाबा ने ऐसी पालना दी है जो हड्डी अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो मेरे से पूछो, इससे ही कर्मेन्द्रियों पर जीत है। कर्मेन्द्रिय जीत यानी कोई इच्छा नहीं, कोई ममता नहीं। आप सब भी जानते पहचानते हो, यह हमारा भाग्य है। निमित्त बनने लिए पार्ट मिला है। बाबा ने हर एक कहाँ न कहाँ निमित्त बनाया है। जो आपको पालना मिली है वो भारत चाहे विदेश की टीचर्स को भी नहीं मिली है। फिर भी लण्डन में जो कोई जायेगा ना, उसे अच्छी भासना आयेगी।

जहाँ जैसी वार्ता चलती है वैसा वहाँ का वातावरण होता है, वैसे वर्ण होता है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। जो पक्का ब्राह्मण होगा उनकी भाषा कैसी होगी? जो क्षत्रिय होगा वो अन्दर युद्ध करता होगा, खुद के साथ या दूसरों के साथ, वो क्षत्रिय है। वैश्य चिंता वाला, शूद्र से तो भगवान बचाये। जैसा वातावरण होगा वैसा फिर वायुमण्डल हो जाता है। ऐसे वायुमण्डल में कुछ और बात नहीं चल सकती है। फिर वही वायब्रेशन दूर दूर तक पहुँच जाते हैं।

साकार के समय एक अनन्य, बहुत नज़दीक की अच्छी आत्मा थी, उसने बाबा को कहा बाबा आपने तो कहा था कि विनाश एक दो साल में हो जायेगा, अभी तक विनाश तो आया ही नहीं। तो बाबा उसका मुँह देखता रहा और कहा बच्चा आज आया है और कहता है विनाश तो आया नहीं! क्या विनाश के पहले अपनी ऐसी स्थिति बना ली है! विनाश के पहले मैं तैयार रहूँ, ऐसी स्थिति बना लूँ। अगर किसी भी बात में जरा भी संशय आया तो बहुत नुकसान हो जाता है। एक भी अगर संशय बुद्धि बनता है तो वह लहर और जगह भी फैलती है, इसमें बहुत सम्भालना चाहिए। अपने बोल और चाल पर ध्यान रखना है। सम्भलके बोलना है, बहुत नाज़ुक बातें हैं। सब महारथी हो ना। अच्छा।

ज्वालामुखी योग के लिए मैं पन को त्याग पुराने स्वभाव, लगाव और तनाव से मुक्त बनो

(गुल्जार दादी जी 14-7-06)

अभी-अभी आप सभी अपने बाबा के स्नेह में और अपने शक्ति स्वरूप स्वमान में, मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, इस अनुभव में बैठे होंगे क्योंकि जब विशेष कोई भी प्रोग्राम होता है तो उसके ही संकल्प चलते हैं। अगर सेवा का कोई प्रोग्राम होता है तो आप देखेंगे, खायेंगे, चलेंगे तो भी वही संकल्प चलते रहेंगे। अभी प्रोग्राम है ज्वालामुखी भट्ठी का तो संकल्प भी ऐसे होंगे।

हरेक बच्चे का बाबा से प्यार तो 100 प्रतिशत है। बाबा का इसमें सर्टीफिकेट मिला हुआ है। लेकिन अनुभवी मूर्त बनना, मास्टर सर्वशक्तिवान बन कर्मेन्द्रियजीत बनना, सेवा में सदा सफलता प्राप्त करना, व्यर्थ संकल्प पर कन्ट्रोल करना, इस पर बाबा ने अभी सर्टीफिकेट नहीं दिया है। जैसे बाबा चाहता है, बाप समान हो, सम्पन्न हों इन बातों में अभी पुरुषार्थी हैं।

अभी सम्पन्न सम्पूर्ण बनना है, उसके लिए ही बाबा ने योग की चार लकीरें डाल कर दी हैं। जैसे सीता के लिए मर्यादा

की लकीर थी। वैसे आप भी इन चार लकीरों के बाहर नहीं निकलना। एक है पावरफुल स्टेज बीज रूप। दूसरी स्टेज है फरिश्ता, तीसरी स्टेज - रुहरिहान बाबा से। चौथी स्टेज है मनन शक्ति। मनन शक्ति के लिए हमारे पास साधन है मुरली। व्यर्थ को कन्ट्रोल करने के लिए मनन शक्ति जरूरी है क्योंकि संकल्प को मनन से ही खत्म कर सकते हैं। किसी से रूहरिहान करो, तो भी मन हल्का हो जाता है। अपने इस अलौकिक जीवन की कहानियां भी अगर याद रखो तो मन का भटकना बंद हो जायेगा। वह भी व्यर्थ संकल्पों को कट कर देगा। कैसे हम मधुबन में आते हैं, कैसे बाबा से मिलते हैं, कैसे रिफ्रेश होते हैं, यह भी हरेक के जीवन की कहानी है। तो यह अनुभव की स्टोरी भी याद करो। मन को वेस्ट थॉट्स के अभ्यास में नहीं ले जाओ। एक बार थॉट्स की आदत पड़ गयी तो मुश्किल से छूटेगी।

सागर में लहरें तो आयेंगी, लास्ट तक आयेंगी। पेपर भी अन्त तक आयेंगे, क्योंकि हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। संगठन है हमारा, उसकी यादगार माला है। माला में दाना एक दूसरे से नहीं मिले, तो माला कैसे बनेगी।

कई बार जब कोई समस्या आती है तो समस्या का ही सोच चलता रहता है। क्या, क्यों, कैसे, कब तक... यही चलता रहता है। मम्मा कहती थी यह कै-कै कौआ कहता है, तुम तो हंस हो। हंस में निर्णय शक्ति बहुत होती है।

हम बीती हुई बातों में क्या, क्यों, कैसे में ही लगे रहते हैं। हम भविष्य की नहीं सोचते, क्या अपने में सुधार करें, क्या अपने में कमजोरी है जो सामना नहीं कर सकते, क्या मेरी निर्णय शक्ति कमजोर है, जो निर्णय कर खुद को भी आगे बढ़ाऊं और दूसरों को भी आगे बढ़ाऊं। इससे हमारी समस्यायें समाधान नहीं होती हैं और ही बढ़ती जाती हैं, इससे एनर्जी, समय सब वेस्ट जाता है। तो चेक करें कि यह फाउण्डेशन ठीक है? सारे दिन में वेस्ट संकल्प व बोल कितने आये? मैं समझती हूँ अभी निगेटिव तो खत्म हो गया है लेकिन व्यर्थ योगियों को बहुत धोखा देता है।

इन सब कमजोरियों का कारण दो प्रकार की मैं है, जो आत्मा को कमजोर करती है। एक अभिमान की मैं, दूसरी दिलशिकस्त की ''मैं''। ये मैं बहुत परेशान करती है। तीन बातें, एक स्वभाव, एक लगाव, तीसरा तनाव। इन तीनों में से कोई न कोई कारण बनता है। अपने शरीर का ही लगाव यानी देहभान, सोल कान्सेस होने नहीं देगा। बाबा ने कहा इन सबको कट करो। पहले वेस्ट थॉट को चेक करो फिर आप ज्वालामुखी योग का अभ्यास कर सकते हो। ज्वाला स्वरूप का अर्थ ही है लाइट-माइट स्वरूप होकर रहना। इसे ही ज्वालामुखी स्टेज कहा जाता है। जब लगाव-तनाव होगा तो लाइट कैसे होंगे? अगर लगाव है, किसके स्वभाव का प्रभाव है या समस्यायें जो आती हैं, उसमें ही लगे रहते हैं तो ज्वालामुखी योग नहीं हो सकता। इसके लिए जो शिवबाबा का स्वभाव है अशरीरी निराकारी, ब्रह्मा बाबा का स्वभाव है न्यारा और प्यारा, यही हमारा भी हो।

बाप समान बनने के लिए लाइट माइट स्वरूप होना है। जैसे लाइट हाउस चारों ओर लाइट देता है, बस स्विच ही ऑन करना होता है। हम भी अपने स्वमान का स्विच ऑन करें, उस स्वरूप में टिकें। जो हमारा पहला पाठ है ''मैं आत्मा हूँ'', तो आत्मिक स्वरूप का अनुभव हो। मैं करावनहार हूँ, इसका अनुभव हो। हर कर्मेन्द्रिय कन्ट्रोल में हो, इसको ही मालिकपन कहा जायेगा। तो पहले यह चेक करें कि सारे दिन में करावनहार आत्मा हूँ, यह स्मृति रहती है? अनुभव होता है आत्मिक स्थिति का?

बच्चे तो सब बने हैं पर वारिस बन वर्से का अनुभव करें उसमें कोई-कोई हैं। जैसे मेरे में बॉडी कान्सेस का मोह है, ऐसे ''मेरा बाबा'' जब कहते हैं तो सचमुच मेरा शब्द अधिकार से निकलता है? फिर मेरे से जो प्राप्तियां होती हैं, उसका अनुभव है? बाबा के पास जो मूल खजाना है, सुख-शान्ति, आनन्द प्रेम, इसका मुझे अनुभव है? बाबा से जिगरी प्रेम है तो प्रेम में हमेशा समर्पण होना पड़ता है। बाबा के प्यार में हम इस देह के भान का समर्पण कर सकते हैं? जो भी बाबा की आज्ञायें हैं, वो प्रेम वाला आज्ञा पालन न करे, यह हो ही नहीं सकता। इसीलिए ज्वालामुखी योग की अनुभूति करने के लिए सब यह प्वाइन्ट पहले स्वयं में चेक करें।

संगठन में चलने के लिए हमारे पास 3 मुख्य शक्तियां जरूर होनी चाहिए। सहन शक्ति, समाने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति। गलती तो किसी भी पुरुषार्थी से हो सकती है लेकिन उसको निर्णय करके मैं शुभ भावना दूँ। उसकी गलती को नहीं उठाऊं। उस समय यही संकल्प आये कि यह आत्मा परवश है। उसकी गलती का वर्णन करना गोया उसे और भी लात लगाकर गिरा देना। यह कितना खराब काम है। तो संगठन में चलने के लिए इन बातों पर ध्यान देना पड़ता है। कोई सोचे कि संगठन से ही किनारा कर लें, यह भी नहीं हो सकता क्योंकि हम बाबा के साथी हैं, राज्य स्थापन कर रहे हैं। संगठन के बिना तो राज्य स्थापन हो ही नहीं सकता। इसलिए संगठन में चलना ही पड़ेगा।

बाबा की निर्मानता से ही वृद्धि हुई है, संगठन एकमत रहा है। इसलिए बाबा ने अपने अन्तिम महावाक्यों में हम सब बच्चों को 3 शब्दों की ही सौगात दी, बच्चे निराकारी, निर्विकारी

और निरंकारी, यह सौगात भी हम याद रखें तो हमारी अवस्था बहुत अच्छी रह सकती है।

प्रश्न:- व्यर्थ संकल्प चलने का कारण और उसका निवारण क्या है?

उत्तर:- जब किसी की कमियां दिखाई देती हैं, परचिन्तन और परर्दशन करने लगते हैं तो व्यर्थ संकल्पों में बहुत समय जाता है। उसे खत्म करने के लिए हमारे पास शुभचिन्तन का स्टॉक इकट्ठा हो। बाबा ने हर मुरली में कोई न कोई स्वमान दिया है। उस वैरायटी स्वमान में हम स्थित रहेंगे तो व्यर्थ खत्म हो जायेगा।

2- हम अपने मन-बुद्धि को भी बिजी रखें, केवल हाथ को ही नहीं। अपने मन का टाइमटेबल जरूर फिक्स करें। तो व्यर्थ से छुटकारा मिल जायेगा।

3- बाबा ने जो भी ईश्वरीय मर्यादायें सिखाई हैं, एक दो को सम्मान देना, सहयोग देना.. इस पर हमारा ध्यान हो। अगर हम किसी को भी डिस्टर्ब करते हैं, सम्मान नहीं देते हैं तो भी आपसी व्यवहार में टकराव होता है और व्यर्थ चिंतन में समय जाता है। सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना यह भी हमारी मर्यादा है।

4- अगर कोई भी सूक्ष्म पाप होते हैं, तो भी बोझ चढ़ता है। अगर सूक्ष्म में भी अवज्ञायें करते हैं तो बोझ बढ़ता जाता है, अवस्था गिरती जाती है।

प्रश्न:- हर एक की निर्णय शक्ति और रियलाइजेशन की शक्ति अपनी है, जिसे एक राइट समझता है, उसे ही दूसरा रांग समझता है, ऐसे समय में कौन सी विधि अपनाई जाए जो संगठन एकमत रहे? कठिनाई पैदा न हो?

उत्तर:- ऐसे समय पर बड़े जो मुकरर हैं, उनकी मदद लेनी चाहिए। अगर कोई रांग कर रहा है, और नुकसान हो रहा है तो उसे रोकना जरूरी है, लेकिन हमारे कहने से वह नहीं समझेगा इसलिए बड़ों से राय दिलानी चाहिए।

प्रश्न:- कई आत्माओं की गति-विधि नुकसानकारक होती है, बाबा कहते हैं साक्षी दृष्टा रहो, तो कहाँ तक हम साक्षी दृष्टा रहें?

उत्तर:- साक्षी-दृष्टा होकर रहना तो ठीक है, इससे हमारी स्थिति पर असर नहीं पड़ेगा। उस आत्मा के प्रति फीलिंग नहीं आयेगी, घृणा दृष्टि नहीं होगी। लेकिन जहाँ नुकसान हो रहा है वहाँ निमित्त आत्माओं को इशारा जरूर देना चाहिए। इशारा देने के बाद संकल्प नहीं चलाने चाहिए कि उसको तो बुलाया ही नहीं, कुछ किया ही नहीं। उसमें हमें नहीं जाना है। इशारा देकर आप हल्के हो जाओ।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

1) बाबा की यह प्रेरणा हर मुरली में विशेष मिलती रहती है कि सभी को अभी यह अभ्यास करना है कि हमें बाबा के पास, बाबा के घर जाना है। अपने को मूलवतन निवासी समझो और ऐसा अभ्यास हो जो हम सभी एक सेकण्ड में अपने संकल्प पर कन्ट्रोल कर लें। बाबा खुद भी कहता यह सबसे बड़ी मेहनत है। संकल्पों पर सेकण्ड में कन्ट्रोल हो जाए इसके लिए बहुतकाल से अपना विशेष अभ्यास चाहिए और यही एक साधना है जो हमें अपने सभी व्यर्थ संकल्पों को अथवा संस्कारों को, दृष्टि, वृत्ति आदि को परिवर्तन कर अपने को एवररेडी बनाती है।

2) क्या आप सभी को अन्दर से यह आवाज आता है कि बरोबर यह समय की घण्टी, समय की सूचना भी हमें भिन्न-भिन्न अनेक रूपों में मिल रही है? जिसको बाबा कहते - बच्चे एवररेडी हो जाओ, अचानक कुछ भी हो सकता है। एवररेडी माना परिवर्तन हो जाओ। नम्बरवन जाना है तो नष्टोमोहा हो जाओ। नष्टोमोहा होना है तो बुद्धि को एकाग्रचित बनाओ। एक के रस में सदा अनुभव करो।

3) अब समय भी हमें सूचना देता है कि अब घर जाना है? क्या आप सबको यह अनुभव नहीं होता कि वतन में बाबा बैठ कह रहे हैं बच्चे, अभी जल्दी करो! बच्चे अभी मेरे वतन में आओ और मेरे साथ चलो! कब तक इस पुरानी दुनिया में बैठे रहेंगे? इस दुनिया में चाहे राज़ सत्तायें, चाहे धर्म सत्तायें… जो सब अभी देख रहे हो, यह जैसेकि अब अन्तिम सीमाओं पर हैं। हर एक बात की जब अति होती है तब अन्त होती है अर्थात् परिवर्तन होता है। बाबा भी कहते क्या तुम बच्चों को दु:खियों की, भक्तों की पुकार कानों में नहीं आती? इनकी अब पुकार सुनो। दु:खियों के दु:ख दूर करो। यह सब जवाबदारियां बाबा ने हम बच्चों पर रखी हैं। बाबा कहते हे बच्चे विश्व का कल्याण तुम्हारे हाथों में है। जब बाबा ने हम बच्चों पर इतनी बड़ी जवाबदारी रखी है तो क्या हम प्रैक्टिकल में उसे निभा रहे हैं? या संगम की इन महान घड़ियों को हम अलबेलेपन में ही गंवा रहे हैं?

4) दादी के दिल में एक बात बार-बार आती है कि हम बाबा

को यह जवाब कब देंगे कि बाबा हम सब एवररेडी हैं? ऐसे तो सब कह देंगे कि हाँ हम एवररेडी हैं। परन्तु हम उसे एवररेडी नहीं मानती। हर एक अपने एवररेडी का मीटर देखे, अपने चार्ट को देखे कि हम बाबा आपके समान बने हैं या नहीं? अर्थात् इन पुराने संस्कारों पर, संकल्पों पर, दृष्टि, वृत्ति पर हमारी सम्पूर्ण विजय है? यह जवाब बाबा को कौन दिल से देता है? यह भाषा समाप्त हो जाए कि अभी भी सूक्ष्म माया से युद्ध चलती है। कभी हार, कभी जीत.. यह सब बातें बचपन की हैं। यह महारथियों का, हम ब्राह्मणों का, राजयोगियों का, सर्वंश त्यागियों का रेसपान्ड नहीं है। अब तो बाबा को यह रेसपान्ड चाहिए कि बाबा मैं एवररेडी हूँ माना स्मृतिर्लब्धा नष्टोमोहा हूँ। संकल्प, श्वॉस, समय सब पर अब हमारी विजय है। इस पुरानी दुनिया से हमारा कम्पलीट लंगर उठा हुआ है। हम ब्राह्मणों का स्टीम्बर अब तैयार है, सिर्फ ग्रीन झण्डी बाबा को देनी है। ऐसे हम अपने आपको संगठन में तैयार समझते? इतना स्वयं पर विशेष ध्यान है?

5) आप सभी बाबा के ब्राह्मण बच्चों प्रति दादी के अन्दर विशेष आता कि क्या आप बाबा के ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा बच्चे ऐसे विकर्माजीत बने हो जो धर्मराजपुरी में सलाम न भरनी पड़े? ऐसी कोई गलती तो नहीं होती जो सलाम करनी पड़े? बस, यही एक फ़िकर चाहे खुद के लिए, चाहे आप सबके लिए रहता कि हम ऐसे विजयी बने हैं! जबकि हम इस कल्प में संगमयुग पर कोटों में कोई, कोई में कोई विरले भाग्यवान बच्चे हैं जिन्हों को सम्मुख में भगवान मिला है। वही हमें पढ़ाता है। बाप, शिक्षक, सतगुरु के रूप में हमें श्रीमत दे उड़ाता है।

6) बाबा कहते तुम बच्चे मेरे दिल में समाये हुए हो, बलिहार हो और तुम बच्चों पर मैं बलिहार हूँ। जिन्हों का बाप से प्यार है, बाबा का उन्हों से प्यार है। जब कभी भी यह शब्द बोलते तो हमें दिल ही दिल में एक अलौकिक लहर आती कि संगमयुग पर भगवान हम बच्चों पर बलिहार है! यह बहुत बड़े हमारे भाग्य की बात है। एक गीत है जिस पर सब दुनिया के बलिहार हैं, वह भगवान हमारे ऊपर बलिहार है। इससे बड़ा और क्या हमें भाग्य चाहिए! फिर भी हम कहें बाबा अभी हम सर्वंश त्यागी नहीं हैं। यह दिल में सुनते बहुत-बहुत ख्याल होता कि अभी त्यागी नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे! संकल्प से भी त्यागी बनना है तो व्यक्ति, वैभव, सम्बन्ध से भी त्यागी बनना है।

7) अगर हमारी बुद्धि इधर-उधर भटकती है, तो उसका कारण क्या है? जरूर सर्व सम्बन्धों का जो रस है वह बाप से नहीं ले रहे हैं। जो यह रस नहीं लेंगे वह अतीन्द्रिय सुख का रस भी कैसे ले सकेंगे। यह रस ही हमें अतीन्द्रिय सुख के रस में सदा रमण कराता है।

8) तो आओ हम सब मिल करके ऐसा कोई विधि-विधान बनायें जो बाबा को हम यह प्रैक्टिकल में रेसपान्ड दें कि बाबा हम इन बाकी थोड़ी सी घड़ियों में आपकी सब आशायें, सर्व इशारे पूरा करके दिखायेंगे। ड्रामा के अन्दर यह भी एक बड़ी अनोखी नूँध है जो हम कोई सन्यासियों मुआफिक जंगल में नहीं बैठे हैं। परन्तु यह हमारा ईश्वरीय बेहद का परिवार है, हम सभी साथ में हैं और साथ ही चलने वाले हैं, बाकी सब आत्मायें तो मच्छरों सदृश्य जायेंगी। तो इसके लिए फिर भी यही साधना है कि विशेष सभी सूक्ष्म में चेकिंग करो और योग की भट्ठियाँ करो। परन्तु भट्ठियाँ ऐसी नहीं हों कि एक घण्टा योग में बैठ गये। बस। लेकिन ऐसी अपनी चेकिंग करो जो हम अपने आपको यह सर्टीफिकेट देवें कि बाबा हम आपके साथ आपके वतन में सम्पन्न बन करके आने के लिए तैयार बैठे हैं।

9) हम राजयोगी कभी यह नहीं कह सकते कि बाबा मैं इस बात के वशीभूत हूँ। बाबा की नज़रों से निहाल होने वाली आत्मायें कभी किसी के वशीभूत नहीं हो सकती। अभी यह शब्द हमारे जीवन के डिक्सनरी से समाप्त हो जाना चाहिए। यह दुनिया का शब्द है, हम तो दुनिया से परे हैं। तो क्या हर एक के अन्दर दिल ही दिल में ऐसे सूक्ष्म विचार चलते हैं कि अब हम कुछ करके दिखायें। आखिर भी कब तक यह दुनिया रहेगी, कब तक हम आप रहेंगे, कब तक यह संगमयुग रहेगा? कब तक अव्यक्त वतन में बाबा हमारे लिए बाहें पसार बैठा रहेगा? इसलिए हमें फिर पीछे न सोचना पड़े, बाबा जो आपकी आशायें हैं, इशारे हैं हम जरूर पूरा करेंगे। इसका सिर्फ ध्यान नहीं रखें लेकिन प्रतिज्ञा करें कि प्रैक्टिकल में पूरा करके ही रहेंगे। जब स्वयं दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तो कहा जाता 'हिम्मते बच्चे मददे बाप।' सच्ची दिल हो तो साहेब राज़ी होगा। तो सभी एकान्त की, अन्तर्मुखता की, योग पॉवर की, अशरीरी बनने की, अतीन्द्रिय सुख के रसों की अनुभूति करो। ऐसा प्लान, प्रोग्राम बनाओ। सवेरे चार बजे से आठ बजे तक और शाम को 6 बजे से 10 बजे तक ऐसे ही समझो आठ घण्टा हम साइलेन्स की भट्ठी में हैं। विशेष टाइम भी साइलेन्स में रहो परन्तु ऐसा समझो कि यह हमारी आठ घण्टा साइलेन्स की भट्ठी है। टोटल हर एक ऐसा पुरुषार्थ करो कि हम आठ घण्टा बाबा के पास, बाबा के साथ, बाबा की यादों में रमण कर रहे हैं। उसकी कोई विधि हरेक अपने आप बनाओ या संगठन में बनाओ। कहने का भाव है अब बाबा की सभी प्रेरणाओं को प्रैक्टिकल में लाओ। अच्छा - ओम् शान्ति।